

बेरोज़गारी

- जनसंख्या

1. श्रम बल

- कामगार
- बेरोजगार

2. गैर-श्रम बल

- श्रमबल का वह भाग जो कार्य करने का इच्छुक भी है और कार्य करने के योग्य भी परंतु फिर भी उसे कोई कार्य नहीं मिल रहा है, बेरोजगार कहलाता है तथा इस अवस्था को बेरोजगारी कहा जाता है।
- बेरोजगारी की गणना NSO के द्वारा की जाती है।
- NSO के द्वारा आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) जारी किया जाता है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS)

- इसकी शुरुआत 2017 में की गयी थी। इसे मासिक (Jan. 2025 Is), त्रैमासिक, वार्षिक स्तर पर जारी किया जाता है।
- इसमें मुख्य तीन संकेतक जारी किए जाते हैं—

i. श्रम बल भागीदारी दर = $\frac{\text{श्रमबल}}{\text{जनसंख्या}} \times 100$

ii. कामगार जनसंख्या अनुपात = $\frac{\text{कामगारों की संख्या}}{\text{जनसंख्या}} \times 100$

iii. बेरोजगारी दर = $\frac{\text{बेरोजगारों की संख्या}}{\text{श्रमबल}} \times 100$

- इन संकेतकों की गणना शहरी क्षेत्रों, ग्रामीण क्षेत्रों, महिलाओं तथा पुरुषों के लिए की जाती है।
- PLFS के अनुसार महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर पुरुषों के मुकाबले काफी कम है।
- ग्रामीण महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर शहरी महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर से अधिक है।

गतिविधि स्थिति

- यह बताता है कि एक संदर्भ अवधि के दौरान व्यक्ति कौनसी गतिविधि में संलग्न है।
- गतिविधि स्थिति के आधार पर व्यक्ति रोजगार युक्त और बेरोजगार हो सकता है।

सामान्य प्रमुख अवस्था बेरोजगारी

- ऐसे लोगों की संख्या जिन्हें पूरे वर्ष भर उनके मुख्य कौशल के अनुसार कार्य नहीं मिला।

सामान्य प्रमुख एवं सहायक अवस्था बेरोजगारी

- ऐसे लोगों की संख्या जिन्हें पूरे वर्ष भर उन्हें उनके मुख्य कौशल तथा कौशल के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं मिला है।
- इसके आँकड़ों को वार्षिक PLFS में प्रकाशित किया जाता है।

वर्तमान साप्ताहिक अवस्था (CWS) बेरोजगारी

- ऐसे लोगों की संख्या जिन्हें पूरे सप्ताह भर कार्य नहीं मिला है।
- इसके आँकड़ों को मासिक व त्रैमासिक PLFS में प्रकाशित किया जाता है।

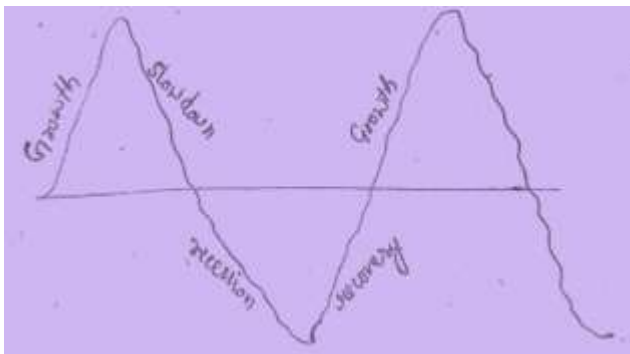
वर्तमान दैनिक अवस्था (CDS) बेरोजगारी

- ऐसे लोगों की संख्या जिन्हें सप्ताह में एक या एक से अधिक दिन कार्य नहीं मिला है।
- वर्तमान में इसके आँकड़ों को प्रयोग में नहीं लिया जाता है।

बेरोजगारी के प्रकार

1. चक्रीय बेरोजगारी

- अर्थव्यवस्था में आर्थिक संवृद्धि और मंदी के चक्र चलते रहते हैं।
- आर्थिक संवृद्धि के समय बहुत से लोगों को रोजगार मिल जाता है; परंतु मंदी के समय बेरोजगारी बढ़ जाती है। इसे चक्रीय बेरोजगारी कहा जाता है।



2. संरचनात्मक बेरोजगारी

- यह बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण होती है अर्थात जो रोजगार उपलब्ध हैं, उनके लिए पुराने कौशल उपयुक्त नहीं हैं।

3. घर्षणात्मक/संघर्षात्मक बेरोजगारी

- जब व्यक्ति अपनी नौकरी/रोजगार को त्याग देता है तथा वह नये रोजगार की तलाश कर रहा है तब वह व्यक्ति बीच में कुछ समय के लिए बेरोजगार रहता है। इसे संघर्षात्मक बेरोजगारी कहा जाता है।
- 4. प्राकृतिक बेरोजगारी**
 - ऐसी बेरोजगारी जिसमें संरचनात्मक व घर्षणात्मक दोनों की विशेषताएँ होती है अर्थात् पुराना कौशल अब माँग में नहीं है तथा व्यक्ति रोजगार त्यागकर नये रोजगार की तलाश कर रहा है।
 - प्राकृतिक बेरोजगारी = (संरचनात्मक + घर्षणात्मक) बेरोजगारी
- 5. मौसमी बेरोजगारी**
 - वर्ष के कुछ भाग में व्यक्ति को रोजगार मिल जाता है तथा शेष भाग में रोजगार नहीं मिलता है।
 - जैसे – पर्यटन और कृषि क्षेत्र में।
- 6. छिद्रित/छिपी हुई बेरोजगारी**
 - जब व्यक्ति किसी कार्य में संलग्न तो होता है परंतु उत्पादन में कोई योगदान नहीं होता है।
 - ऐसी बेरोजगारी सर्वाधिक कृषि क्षेत्र में देखी जाती है।
- 7. तकनीकी बेरोजगारी**
 - ऐसी बेरोजगारी जो तकनीक में बड़े परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होती है।
 - जैसे— कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), रोबोटिक्स इत्यादि।
- 8. अल्प बेरोजगारी**
 - जब व्यक्ति को अपनी क्षमता/कौशल के अनुसार कार्य नहीं मिलता है तो इसे अल्प बेरोजगारी कहते हैं।

बेरोजगारी के कारण

- भारत की GDP में सर्वाधिक योगदान सेवा क्षेत्र का है। लगभग 55% GDP सेवा क्षेत्र से आती है। परंतु सेवा क्षेत्र के द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार का सृजन नहीं किया जाता है, इसलिए भारत की आर्थिक समृद्धि को कुछ विशेषज्ञों द्वारा 'रोजगारविहीन संवृद्धि' (Jobless Growth) भी कहा गया है।
- भारत के औद्योगिक क्षेत्र का विकास पर्याप्त रूप से नहीं हुआ है।
- कृषि क्षेत्र का पिछड़ापन जबकि 45% जनसंख्या रोजगार के लिए कृषि पर निर्भर है।
- जनसंख्या वृद्धि— यद्यपि वर्तमान में भारत की जनसंख्या को सकारात्मक रूप से देखा जाता है क्योंकि भारत एक युवा देश है तथा भारत के पास *जनाकंकीय लाभांश* का अवसर है।
- कौशल का अभाव
- शिक्षा का अभाव
- भारत में उद्यमिता का अभाव है। इसलिए रोजगार ढूँढने वालों की संख्या ज्यादा है तथा रोजगार देने वालों की संख्या कम है।
- वित्तीय समावेशन का अभाव
- गरीबी
- कुपोषण
- तकनीक में परिवर्तन (उदा.— AI)

बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के उपाय —

- श्रम सघन क्षेत्रों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जैसे — वस्त्र उद्योग, फुटवियर उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग।
- आधारभूत ढाँचे को सशक्त किया जाना चाहिए जिससे घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित किया जा सके।
- व्यवसाय करने की सुगमता को बढ़ाया जाना चाहिए।
- स्वरोजगार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और तकनीक, प्रबंधन और विपणन का मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए।
- कौशल विकास के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।
- रोजगार गारण्टी की योजनाएँ चलाई जानी चाहिए।

बेरोजगारी को कम करने के लिए सरकार की योजनाएँ —

- VB-G RAM G (मनरेगा)
- पीएम कौशल विकास योजना
- पीएम उद्यमिता योजना
- लखपति दीदी योजना
- पीएम मुद्रा योजना
- पीएम स्वनिधि योजना
- पीएम विश्वकर्मा योजना
- दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना — राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (DAY NULM)
- आजीविका — राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
- रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन योजना। (प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना)